

**असत्ता स्त्री.** (तत्.) 1. अस्तित्व का न होना, अस्तित्वहीनता, सत्ता ही न होना 2. बुराई, दुष्टता बिलो. सत्ता।

**असत्य वि.** (तत्.) जो सच्चा न हो, झूठा, तथ्य के विपरीत पुं. 1. झूठ 2. कल्पना।

**असत्यता स्त्री.** (तत्.) असत्य होने की स्थिति या भाव, झूठ बिलो. सत्यता।

**असत्यवादी वि.** (तत्.) झूठ बोलने वाला, मिथ्यावादी।

**असत्यशील वि.** (तत्.) वह जो अक्सर झूठ ही बोलता है, जिसका स्वभाव झूठ बोलने का हो।

**असत्यसंध वि.** (तत्.) 1. असत्य के आधार पर आचरण करने वाला, कपटी 2. कृतघ्न, धोखा देने वाला।

**असत्त्व वि.** (तत्.) 1. सत्त्वहीन 2. कमजोर 3. जिसमें अच्छाई न हो पुं. 1. असत्ता 2. असत्यता 3. बुराई बिलो. सत्त्व।

**असत् संसर्ग पुं.** (तत्.) बुरे लोगों का संपर्क, कुसंगति।

**असदागम पुं.** (तत्.) ऐसे शास्त्र जो वेदों को प्रमाण न मानते हों, वैदनिंदक शास्त्र।

**असदृश वि.** (तत्.) 1. असमान, बेमेल 2. अनुचित, अयोग्य।

**असद्भाव पुं.** (तत्.) 1. सद्भाव अथवा अच्छे मनोभाव का अभाव, दुर्भाव, बुरी भावना, दुराशय 2. असत् का भाव, असत्ता बिलो. सद्भाव।

**असद्भावना स्त्री.** (तत्.) बुरी भावना, दुर्भावना।

**असद्वाद पुं.** (तत्.) दर्श. संसार के समस्त पदार्थोंको 'असत्' या मिथ्या माननेका सिद्धांत, इसके अनुसार कोई पदार्थ सत् नहीं होता।

**असद्वादी वि.** (तत्.) असद्वाद के सिद्धांत को मानने वाला।

**असद्विद्या स्त्री.** (तत्.) असत्य का मार्ग दिखलाने वाली विद्या जैन. पतन का मार्ग दिखलाने वाली विद्या।

**असद्वृत्ति स्त्री.** (तत्.) नीच कर्म या पेशा, अस्पष्टवृत्ति।

**असन पुं.** (तत्.) भोजन, अशन। पुं. 1. असमा, एक प्रकार का वृक्ष 2. फेंकना 3. क्षेपण 4. छोड़ना 5. चलाना (बाणादि)।

**असना पुं.** (तत्.) साल जैसा एक वृक्ष जिसका तना अंदर से भूरे-काले रंग का होता है, इसका प्रयोग भवन निर्माण में होता है।

**असन्नद्ध वि.** (तत्.) 1. जो युद्ध के लिए सशस्त्र तैयार न हो बिलो. सन्नद्ध।

**असन्निकर्ष पुं.** (तत्.) निकटता का अभाव, दूरी।

**असन्निधान पुं.** (तत्.) 1. साथ-साथ होने की स्थिति का न होना, अनिकटता 2. अनुपस्थिति 3. मित्रता का अभाव बिलो. सन्निधान।

**असन्निधि स्त्री.** (तत्.) 1. दे. असन्निकर्ष 2. मैत्री या घनिष्ठता का न होना 3. निरंतरता का अभाव।

**असन्निहित वि.** (तत्.) 1. जो निकट न हो, दूरवर्ती 2. अनुचित या गलत ढंग से रखा हुआ बिलो. सन्निहित।

**असपत्न पुं.** (तत्.) 1. जिसका कोई शत्रु न हो। अज्ञात शत्रु 2. जिसकी कोई सौत न हो।

**असपिंड वि.** (तत्.) जो संपिंड न हो टि. किसी व्यक्ति के पूर्वजों की तीन पीढ़ियाँ और आने वाली तीन पीढ़ियाँ इस प्रकार सात पीढ़ियों के लोग सपिंड कहलाते हैं, शास्त्रानुसार मृत व्यक्ति का पिंडदान करने का अधिकार जिन्हें होता है वे भी सपिंड कहलाते हैं।

**असफल वि.** (तत्.) 1. जो सफल न हो, नाकामयाब, निष्फल 2. व्यर्थ बिलो. सफल।

**असफलता स्त्री.** (तत्.) विफलता, सफलता का अभाव, नाकामयाबी बिलो. सफलता।

**असबाब पुं.** (अर.) 'सबब' अर्थात् हेतु या साधन का बहुवचन। 1. आवश्यक चीज या वस्तु 2. यात्री के साथ का सामान 3. प्रयोजनीय पदार्थ।